E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी,

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

नान्दी पाठ के अनन्तर सूत्रधार नटी को "अभिज्ञान शाकुन्तल" का अभिनय प्रस्तुत करने का आदेश देता है। तत्पश्चात् रथारूढ राजा धनुष-बाण हाथ में लिये मृग का पीछा करता हुआ सारथि के साथ तपोवन में प्रवेश करता है। राजा मृग पर ज्यों ही बाण-वर्षा करना चाहता है त्यों ही एक तपस्वी वैखानस राजा को यह कह कर रोक देता है कि 'आश्रम-मृग' अवध्य है। राजा तत्काल अपने बाण को प्रत्यञ्चा से उतार लेता है।

तपस्वी शुभाशीष प्रदान करता है कि उसे चक्रवर्ती पुत्र की प्राप्ति हो। तपस्वी वैखानस राजा से निवेदन करता है कि वह (राजा) मालिनी नदी के तट पर कुलपति कण्व के आश्रम में अतिथि सम्मान ग्रहण करे। सम्प्रति कुलपति कण्व शकुन्तला की भाग्य-विपरीतता के शमन हेतु सोमतीर्थ गये हैं। उनकी अनुपस्थिति में शकुन्तला अतिथि सत्कार का दायित्व सँभाल रही है।

राजा दुष्यन्त रथ को आश्रम के सीमान्त में रोक कर साधारण वेष में आश्रम में प्रविष्ट होता है। इतने में ही जब वह कुछ मधुर स्वर सुनता है तो घूमकर देखता है, वहाँ तीन आश्रम कन्यायें वृक्ष-सिंचन में तल्लीन हैं। उन कन्याओं में से कण्व पुत्री शकुन्तला के रूपमाधुर्य पर वह आकृष्ट हो जाता है और वृक्ष की ओट में छिपकर अपलक नेत्रों से उसके रूप-सौन्दर्य का पान करता है। शकुन्तला कभी मौलसिरी वृक्ष की ओर तथा कभी वनज्योत्सना के समीप जाती है। सखियों के हास-परिहास के मध्य ऊपर आया एक भौंरा शकुन्तला के मुख की ओर आने लगता है। शकुन्तला सम्भ्रमित होकर रक्षा के लिये सखियों को पुकारती है। सखियाँ मुस्कराकर राजा दुष्यन्त को पुकारने के लिए कहती हैं क्योंकि आश्रमजन राजा द्वारा ही रक्षित होते हैं। अवसर देखकर छिपा हुआ दुष्यन्त स्वयं को प्रकट कर भ्रमर

से आक्रान्त शकुन्तला की रक्षा करता है। अकस्मात् अपरिचित राजा को सम्मुख देखकर प्रियंवदा सखी शकुन्तला को राजा का सत्कार करने के लिये कहती है।

राजा को वृक्ष की छाया में बैठाकर स्वयं तीनों बैठ जाती हैं। वार्तालाप के प्रसङ्ग में राजा को अनसूया से ज्ञात होता है कि शकुन्तला का जन्म ऋषि विश्वामित्र एवं मेनका के सम्पर्क से हुआ है एवं परित्यक्ता होने पर वह कण्व द्वारा पालित एवं पोषित है। राजा के प्रश्न एवं जिज्ञासा का समाधान करती हुई प्रियंवदा जब यह कहती है कि पिता कण्व इसे योग्य वर को देने के लिये कृतसंकल्प हैं। तब राजा अपने मन में शकुन्तला के साथ अपने विवाह के विषय में आश्वस्त हो जाता है परन्तु प्रियंवदा की बातों को सुनकर शकुन्तला कुछ रुष्ट होकर जाने के लिये उद्यत हो उठती है। तब तक परिहास में वृक्ष-सिंचन के ऋण का स्मरण कराकर प्रियंवदा उसे रोकना चाहती है। राजा अंगूठी द्वारा शकुन्तला को ऋणरहित करना चाहता है। अंगूठी पर अंकित दुष्यन्त के नाम को पढ़कर अनुसूपा और प्रियंवदा जब एक दूसरे की ओर देखने लगती हैं, तब राजा अपने को दुष्यन्त न समझने का निवेदन करता है। नेपथ्य में ध्वनि होती है कि एक जंगली हाथी भयभीत होकर इधर ही आ रहा है। भयाक्रान्त होकर तापस कन्यायें आश्रम की ओर चली जाती हैं। शकुन्तला के प्रति आकृष्ट राजा राजधानी-गमन स्थगित कर खिन्न होकर पड़ाव की ओर चला जाता है।